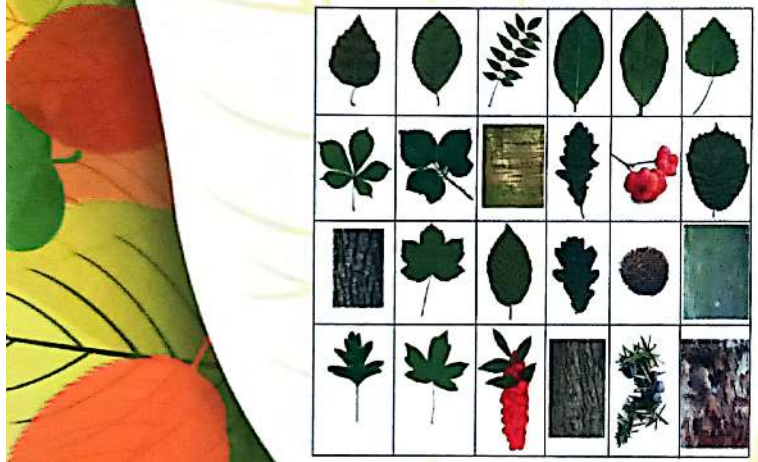


75/-

ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
तीतरवाड़ा कलाँ, बाया-कुण्डल, दौसा-303 325 (राजस्थान)
Email : gvssdp@rediffmail.com

पर्यावरण शिक्षण पुस्तिका भाग-2

हमारी वृक्ष सम्पदा

ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
Ministry of Environment, Forest and Climate Change
भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

पर्यावरण शिक्षण पुस्तिका भाग–2

शिक्षण सामग्री

हमारी वृक्ष सम्पदा

दृगपाल सिंह

ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
तीतरवाड़ा कलाँ, वाया–कुण्डल, जिला–दौसा–303 325 (राजस्थान)
Email - gvssdp@rediffmail.com

Ministry of Environment, Forests and Climate Change
भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

© GVSS ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान

प्रथम संस्करण	:	दिसम्बर, 2014
लेखन	:	दृगपाल सिंह
सहयोग	:	वैद्य श्री शम्भूदयाल शर्मा
टिप्पणी	:	वैद्य श्री शम्भूदयाल शर्मा डॉ. ओमप्रकाश कुलहरि श्री संतोष गुप्ता श्री भारत भूषण शर्मा
सम्पादन	:	श्री अशोक मुदगल
छायाचित्र	:	ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
प्रकाशक	:	ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान, दौसा
आर्थिक सहयोग	:	वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार
मुद्रक	:	जैन प्रिन्टर्स, दौसा

इस पुस्तक में छपी सामग्री व फोटोज का उपयोग करने के लिये प्रकाशक की लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	वृक्ष का नाम	पृष्ठ सं.
1.	वृक्षों के नाम व उनके वैज्ञानिकों के नाम	5
2	अमलतास – गरमाला	6
3	अर्जुन– ताल वृक्ष ,कोहडा	7
4	आँवला	8
5	आम	9
6	खेजडी	10
7	गूगल	11
8	गुलमोहर	12
9	ढाक ,पलाश, छीला, खांकरा, टेसू	13
10	देशी बबूल– कीकर–बोंली	14
11	धोंक – धोंकडा	15
12	नींबू	16
13	फराश	17
14	बहेडा	18
15	बंगाली बबूल	19
16	बाँस	20
17	बिलायती कीकर	21
18	भिलावा , भेला	22
19	महुआ	23
20	मिजारी	24
21	मौलसिरी	25
22	रोंझ– सफेद कीकर	26
23	रोहिडा	27
24	सफेदा , यूकेलिप्टस,नीलगिरी	28
25	सू–बबूल	29
26	सालर	30
27	सागवान	31
28	शहतूत, तूंत	32
29	क्षेत्र में पाये जाने वाले वृक्ष, घास व झाडियों की सूची	33–35

Scanned with OKEN Scanner

प्राक्कथन

व्यावहारिक ज्ञान की पुस्तक श्रृंखला के प्रकाशन की यह द्वितीय पुस्तक है। प्रस्तुत पुस्तक जमवारामगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य (जयपुर) के वन क्षेत्र में पाये जाने वाले तथा राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर उगने वाले उपयोगी 27 वृक्षों की प्रजातियों के सम्बन्ध में लिखी गई है तथा प्रकाशित की जा रही है। पुस्तक में संकलित प्रजातियों का चयन इनकी उपलब्धता व उपयोगिता तथा महत्व को ध्यान में रखकर किया गया है।

हम निम्न विद्यालयों के सभी अध्यापकों व प्रधानाध्यापकों के आभारी हैं, जिन्होने इसके लिए समय दिया, ये विद्यालय हैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रायसर, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, थली, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, डांगरवाडा, राजकीय माध्यमिक विद्यालय डगोता, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बस्सी, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, श्रीनगर, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गुवाडा, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कुशलपुरा, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, राम्याला तथा वैद्य श्री शम्भूदयाल शर्मा व स्थानीय गांव के लोगों के भी आभारी हैं, जिन्होने इन वृक्षों के उपयोग के सम्बन्ध में जानकारी दी। हम श्री भूपेन्द्रसिंह, श्री पूरणमल गुर्जर, श्री रंगलाल, श्री हरिनारायण मीणा, श्री गंगाराम, श्रीमती विमला चौहान के आभारी हैं जिन्होने जानकारी जुटाई तथा हम उन सभी महानुभावों के भी आभारी हैं। जिन्होने पुस्तक को तैयार करने में अपने अमूल्य विचारों व सुझावों से पुस्तक को इस रूप में लान व प्रकाशित करने में सहयोग किया।

यह पुस्तिका युवाओं व बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने तथा व्यवहारिक ज्ञान वर्द्धन कर वृक्षों की उपयोगिता समझने में सहायक होगी। जिससे वे अपने पर्यावरण को समझ कर उसके संरक्षण के प्रति जागरूक बन सकेंगे। इस पुस्तिका को पर्यावरण अध्ययन के विषय के लिए सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में भी शामिल किया जा सकता है।

दृगपालसिंह

वृक्षों के नाम व उनके वैज्ञानिक नाम

क्र.सं.	वृक्ष का नाम	वैज्ञानिक नाम	
1	अमलतास– गरमाला	Cassia fistula	केसिया फिस्टुला
2	अर्जुन– ताल वृक्ष, कोहडा	TerminaliaArjuna	टर्मिनेलिया अर्जुना
3	आँवला	Embica Officinalis	ऐम्बेलिका ऑफिसिनेलिस
4	आम	Mangifera Indica	मैन्जिफैरा इन्डिका
5	खेजडी	Prosopis cineraria	प्रासोपिस सिनेरेरिया
6	गूगल	Commiphora wightii	कोमीफोरा वाइटिई
7	गुलमोहर	Delonix regia	डेलोनिक्स रेजिया
8	ढाक ,पलाश, छीला, खांकरा, टेसू	Butea monosperma	ब्यूटिया मोनोस्परमा
9	देशी बबूल– कीकर–बोंली	Acacia nilotica	अकेशिया निलोटिका
10	धोंक – धोंकडा	Anogeissus pendula	एनोगीसेस पेंडुला
11	नींबू	CitrusAurantifolia	साईटरस एयुरन्टीफोलिया
12	फराश	TemericsAphaila	टेमेरिक्स अफाइला
13	बहेडा	Terminalia bellirica	टर्मीनेलिया बेलिटिका
14	बंगाली बबूल	AcaciaAuriculiformis	अकेशिया औरीकुलीफोर्मिस
15	बाँस	Dendrocalamus strictus	डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस
16	बिलायती कीकर	Prosopis juliflora	प्रोसोपिस जूलीफलोरा
17	भिलावा, भेला	SemecarpusAnacardium	सेमकारपस एनाकरेडियम
18	महुआ	Madhuca longifolia	मधुका लोन्जीफोलिया
19	मिजारी	Cassia ciama	केशिआ सिआमा
20	मौलश्री	Mimusops elengi	मिम्युसोपस एलेंगी
21	रौंझ– सफेद कीकर	Acacia leucophloea	अकेशिया ल्यूकोफलोइया
22	रोहिडा	Tecomella Undulata	टीकोमेला अन्डूलेटा
23	सफेदा, यूकेलिप्टस,नीलगिरी	Eucalyptus terticornis	युकेलिप्टस टेरटीकॉर्निस
24	सूबबूल	Leucaena leucophloea	ल्युकेना ल्युकोफलोईया
25	सालर	Boswellia seÜkata	बास्वेलिया सीरेटा
26	सागवान	Tectona grandis	टेक्टोना ग्रेन्डिस
27	शहतूत	MorusAlba	मोरस एल्बा

Scanned with OKEN Scanner

अमलतास

देशी नाम : अमलतास, गरमाला ,कडियाला
वैज्ञानिक नाम : *Cassia fistula* केसिया फिस्टुला
उपयोगी भाग : पत्ते, छाल, फल व जड की छाल

अमलतास का पेड 5 से 10 मीटर तक ऊँचा होता है , इसका मुख्य तना हल्के पीले रंग का सफेदी लिए होता है। पत्तियाँ चिकनी तथा हल्की नुकीली होती है। ये मार्च से मई के मध्य झड जाती है। अमलतास के वृक्ष पर पीले फूल गुच्छो मे लटकते हुए आते हैं। इनसे पूरा पेड ढक जाता है। तथा बहुत सुन्दर लगता है इसकी फलियाँ लम्बी व गोल गहरे चमकते भूरे रंग की होती है। कच्ची फलियाँ हरे रंग की होती हैं फलियाँ दिसम्बर से जनवरी तक पककर तैयार होती हैं। फलियों में मीठा कशैला गूदा होता हैं, गूदे में कत्थई रंग के गोल चपटे बीज भरे होते है।

अमलतास के पेड के पत्ते, तने की छाल, फल व जड की छाल उपयोगी भाग होतें है। इसकी फली के गूदे का उपयोग मूंह के छाले दूर करने मे तथा दस्तावर (मृदु रेचक) के रूप मे करते हैं। इसकी फली का गूदा दस्तावर होता है। इसकी छाल कूटकर खाने से वायु विकार दूर हो जाते हैं। इससे जलाने के लिए लकडी प्राप्त होती है तथा हल व अन्य औजारो के हत्थे बनाने के काम आती हैं। पत्तो का उपयोग हरी खाद बनाने मे भी होता है। इसकी छाल में टेनिन नामक पदार्थ होता है। जिससे चमडे की रंगाई की जाती हैं। सुन्दर फूलो के कारण इसे बगीचो एवं सडक के किनारे की शोंभा बढाने के लिए उगाते हैं। गांव के लोग फली को चारपाई में लगाते है जिससे डरावने सपने नहीं आते। इसकी फलियो के गूदे को जंगली जानवर खाते है।

इसका पेड प्रायः सभी प्रकार की मिट्टी मे पनपता है। अरावली की पहाडियों मे सभी जगह मिल जाता है। इसके लिए थोडी चिकनी व नमी वाली जमीन बहुत अच्छी होती है। कठोर मिट्टी मे इसकी बढवार कम होती है। नया पौधा नर्सरी में बीज से तैयार किया जाता है।

अर्जुन

देशी नाम : अर्जुन , ताल, कोहडा
वैज्ञानिक नाम : *Terminalia Arjuna* टर्मिनेलिया अर्जुना
उपयोगी भाग : पत्ते, छाल, फल

यह सदाबहार हमेशा हरा रहने वाला 20–25 मीटर ऊँचाई तक बढने वाला वृक्ष है। इसे ताल वृक्ष भी कहते है। इसका तना सफेद तथा चिकना होता है। अलवर जिले मे ताल वृक्ष एक स्थान है यहां अर्जुन के बहुत बडे व सघन पेड है जिसके कारण यह स्थान ताल वृक्ष कहलाता है। इसकी जडें फैली हुई होती है। जमीन के पास तने को सहारा देने के लिए कुछ जडे होती है इन्हे विप्र मूल कहते है इसकी छाल आडी–बांकी परतो मे झडती रहती हैं, शाखायें लम्बी व नीचे की और झुकी होती है पुरानी पत्तियाँ गिरने के पहले ही नई पत्तियाँ आ जाती हे। पत्तियाँ खुरदरी ,बडी व मॉसल होती हैं, इनके आधार पर ग्रन्थियाँ होती है फूल सफेद व छोटे होते है फल गहरे भूरे रंग के होते हैं जो कि लकडी जैसे कठोर होते हैं।

इसके तने की छाल ,फल व पत्ते उपयोगी भाग होते हैं। इसकी छाल मे औषधीय गुण होते है। जिससे ताकत बढाने, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग व अलसर की दवाईयां बनाई जाती है। ताजे पत्तों का रस कान के दर्द में तथा गले की सूजन में व अपच में इस्तेमाल करते है। इसके पत्ते चारे में भी काम आते है इसकी लकडी ईंधन व कृषि उपकरण बनाने के काम आती है। छाल व फलो मे टेनिन होता है जो कि चमडा रंगने मे काम आता है। इसकी पत्तियों पर रेशम कीट भी पाले जाते है।

इसके लिए नम व जलोढ मिट्टी जिसमे जल निकास अच्छा हो अच्छी होती है पहाड़ियों पर यह नहीं पनपता। सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

आँवला

देशी नाम : आँवला
वैज्ञानिक नाम : *Embica Officinalis* ऐम्बेलिका ऑफिसिनेलिस
उपयोगी भाग : पत्ते, छाल, फल व बीज

आँवले का वृक्ष मध्यम आकार का होता है इसकी ऊँचाई 3 से 10 मीटर तक हो जाती है इसकी शाखाऐं मुलायम व कमजोर होती है पत्ते पंख की तरह संयुक्त होते है रात्रि मे इसकी पत्तियाँ बन्द हो जाती है। इसकी छाल हल्की सफेदी लिए धूसर रंग की होती है। आँवले के पेड की उम्र 50–60 वर्ष होती है। आँवले का फल कच्चा हरे रंग का तथा पकने पर पीले रंग का हो जाता है फल मे विटामिन सी बहुत अधिक मात्रा मे होता है। तथा आँवले के सूखने, उबालने आदि पर भी नष्ट नही होता आँवले के फूल हल्के हरे – पीले रंग के छोटे–छोटे गुच्छों मे लगते है नर व मादा फूल अलग – अलग होते है।

आँवले का फल ,बीज, जड व तने की छाल बहुत उपयोगी होता है। आँवले का उपयोग च्यवनप्राश बनाने पाचक चूर्ण बनाने , मुरब्बा व अन्य आयुर्वेदिक औषधी बनाने में तथा आँखो के व बालो के रोग मे इसके चूर्ण को भिगोये हुए पानी का उपयोग करते है। इसके बीज से दमा व श्वसन नली की सूजन ठीक करने की दवाई बनाते है। लकडी ईंधन मे तथा कृषि के औजारो के हत्थे बनाने में काम आती है। पत्तियाँ चारे के रूप मे उपयोग की जाती है।

आँवले के लिए नमी वाली भूमि सबसे अच्छी रहती है परन्तु क्षारीय व कमजोर भूमि मे भी उगाया जा सकता है प्राकृतिक रूप से यह अरावली की पहाडियाँ में पाया जाता है। जंगली आँवले मे कलमी आँवले से ज्यादा औषधिय गुण होते है। आँवले का पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

आम

देशी नाम : आम
वैज्ञानिक नाम : *Mangifera Indica* मैन्जिफैरा इन्डिका
उपयोगी भाग : पत्ते, छाल, फूल ,फल व गोंद ,लकडी , बीज

आम का वृक्ष मध्यम आकार का होता है। इसकी ऊँचाई 3 से 10 मीटर तक हो जाती है। पुराने व देशी आम के वृक्ष काफी बडे हो जाते हैं परन्तु आजकल इसके कलमी वृक्ष बहुत मात्रा में मिलते हैं। इसकी शाखाऐं मुलायम व कमजोर होती है। पत्ते छोटी – छोटी टहनियों के आखिर में गुच्छों में लगते हैं। पत्तों का रंग हरा होता है परन्तु नये पत्ते कत्थई रंग के होते हैं। इसकी छाल धूसर व कत्थई रंग की होती है जो आडी–टेढी धारियों के रूप में कटी फटी होती है।

आम के फूल, पत्ते, फल, तना व गोंद उपयोगी होते है। इसका फल बहुत स्वादिष्ट होता है। पका हुआ आम मीठा होता हैं। देशी आम के कच्चे फलों का अचार बनाया जाता है। आम कब्ज करने वाला फल होता है। आम खाकर ऊपर से मीठा दूध पीने से कब्ज नही करता तथा शरीर के लिए बहुत पौष्टिक होता है। आम की गुठली को आग में भूनकर उसकी अन्दर की मींग का चूर्ण बनाकर खाने से कब्ज में लाभकारी होता है। कच्चे आम को आग में भून कर या पानी में उबालकर उसके गुदे का शरबत बनाकर पीने से लू लगने पर बहुत लाभकारी होता है। आम की लकडी को ईंधन के रूप मे भी उपयोग किया जाता है। इसकी लकडी कृषि के औजारो के हत्थे व फर्नीचर बनाने में काम ली जाती है। पत्तियाँ चारे के रूप मे उपयोग की जाती है।

आम के लिए नमी वाली भूमि सबसे अच्छी रहती है। परन्तु यह थोडी क्षारीय व कमजोर भूमि मे भी उगाया जा सकता है। आम का पौधा बीज से तैयार किया जाता है। कलमी आम का पौधा कलम चढाकर तैयार किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

खेजडी

देशी नाम : खेजडी
वैज्ञानिक नाम : *Prosopis cineraria* प्रासोपिस सिनेरेरिया
उपयोगी भाग : पत्ते, छाल, फलियाँ ,लकडी

खेजडी का वृक्ष थार के रेगिस्तान में रेतीले टीलो के बीच प्रचुर संख्या मे मिलता है। यह राजस्थान मे राज वृक्ष के रूप मे जाना जाता है। दशहरे पर इसकी पूजा की जाती है। इसकी ऊँचाई लगभग 18 मीटर होती है। इसकी जडे काफी गहरी चली जाती है। इसलिए कम पानी वाली जगह भी आसानी से पनप जाता है इसकी छाल धूसर रंग की खुरदरी लम्बी व आडी धारियों में कटी फटी होती है और छोटे–छोटे टुकडो में गिरती रहती है। इसकी पत्तियाँ संयुक्त तथा गहरे हरे रंग की होती है। पत्तियाँ व टहनियो पर राख के समान चुर्ण जमा होता है। इसकी शाखाओ पर त्रिभुजाकार अंकुश के आकार के छोटे तथा कत्थई रंग के कांटे होते हैं इसकी पत्तियाँ फरवरी– मार्च माह मे झड़ती है। फूल आकार मे छोटे तथा पीले रंग के होते है। फलियाँ 20 सेंमी तक लम्बी व गोल पकने पर भूरे पीले रंग की हो जाती है जिनमे मीठा पाउडर जैसा गूदा होता है। इसकी सब्जी भी बनाई जाती है। इसकी फलियों को सांगरी कहते है।

इसकी सांगरी बहुत पौष्टिक होती हैं। सांगरी राजस्थान के विशिष्ट व प्रसिद्ध पंचकूट (सब्जी) मे प्रमुख रूप से उपयोग होती है। राजस्थान का यह बहुत पूज्य व प्रमुख वृक्ष है। अकाल के समय यह जीवन दाता का काम करता है। इसकी पत्तियाँ व सांगरी चारे के रूप मे इस्तेमाल होती है। इसकी छंगाई सर्दियो के दिनो मे करते है। लकडी औजारो के हत्थे बनाने के काम आती है। लकडी को ईंधन के रूप मे भी इस्तेमाल किया जाता है।

इसके लिए बलुई व दोमट भूमि उपयुक्त होती है। यह पहाडी क्षेत्रो मे नही पनपता। यह बालू के टीलो में खूब पनपता है। खेजडी का नया पौधा बकरी के द्वारा खाई गई फलियों के बीज जोकि उसकी मींगनी में आ जाते हैं उन्हीं के द्वारा पौधे तैयार होते हैं।

गूगल

देशी नाम गूगल, गुग्गुल
वैज्ञानिक नाम *Commiphora wightii* कोमीफोरा वाइटिई
उपयोगी भाग पत्ते , गौंद , तेल

अरावली पर्वत श्रृंखला मे पहाडी ढलानो पर तथा चोटियों पर पाया जाता है। इसका वृक्ष छोटे आकार का 2 से 3 मीटर तक ऊँचाई का होता है। इसकी शाखाओं का अग्रभाग नुकीला होता है। यह धौक के वृक्षों के साथ पाया जाता है। शाखाओं के अग्रभाग पर काँटो जैसी संरचनाऐं होती हैं। इसके पत्ते शाखाओ पर लगती है। इसके पत्तो को रगड कर सूंघने पर तेज खुशबू आती है। इसका तना गाँठ गठीला तथा टेढा– मेढा होता हैं। इसकी छाल हरापन लिए हुए पीले रंग की होती है तथा कागज की परतो जैसे उतरती रहती है। इसकी जडे उथली रहती है। पत्तियाँ शाखाओं के सिरो पर आरी के मोटे दांतों के समान कटी – फटी कुछ गोलाई लिए होती हैं। वर्षा ऋतु में नये पत्तो आते हैं। पत्तियों का रंग हल्का हरा होता है। इसके पेड की बढवार बहुत धीमी होती है। इसके फूल छोटे आकार के लाल भूरे रंग के होते हैं। फल छोटे आकार का होता हैं जो पकने पर लाल रंग का हो जाता है। इसके वृक्ष की आयु बहुत अधिक होती है।

इसके तने पर चीरा लगाने से तरल निकलता है जो सूखने पर धूसर रंग का हो जाता हैं इस गोंद को गूगल कहते हैं जो बाजार में इसी नाम से मिलता है। गोंद निकालने के लिए चीरा लगाने से नष्ट हो जाने के कारण वर्तमान में इस वृक्ष की संख्या घटती जा रही है।

इसके पत्ते, गौंद, तेल आदि उपयोगी भाग होते हैं। इसका गोंद (गुग्गुल) बलवर्द्धक होता है। गुग्गुल गठिया वात के इलाज में उपयोग करते है। यह दस्तरोधी संकोचक, जंतुनाशक होता है। गुग्गुल का लेप करने से अंगों में खिचाव व दर्द को दूर करता है। यह रक्त में कोलेस्टरोल कम करता है। इसकी शाखा से दातून करने से दाँत मजबूत होते है। इससे कई प्रकार की दवाईयाँ तथा धूप बत्ती बनाई जाती है। इसकी पत्तियों को बकरियाँ खाती हैं।

इसका वृक्ष पत्थरीली पहाड की ढलान कम गहरी मिट्टी मे भी आसानी से पनपता है। इसकी डाल काट कर लगाने से नया पौधा तैयार हो जाता है। इसका तना काटने पर बहुत समय तक सूखता नही हैं।

Scanned with OKEN Scanner

गुलमोहर

देशी नाम गुलमोहर
वैज्ञानिक नाम *Delonix regia* डेलोनिक्स रेजिया
उपयोगी भाग पत्तियाँ लकडी

गुलमोहर का वृक्ष मध्यम आकार का होता है इसकी ऊँचाई 3 से 10 मीटर तक हो जाती है। इसका क्षेत्र काफी फैला हुआ होता हैं। इसकी छाया सघन होती है। इसकी शाखाऐं मुलायम व कमजोर होती है जो कि सूखकर गिरती रहती हैं! पत्ते पंख की तरह संयुक्त व लम्बे तथा चौडे आकार के होते है। इसकी छाल भूरी तथा धूसर रंग की होती हैं।

इसके वृक्ष को बागीचों में पार्को में सडक के किनारे शौभा के लिए लगाते हैं। इसके फूल गहरे लाल रंग के आकार में कुछ बडे होते हैं जों कि बहुत सुन्दर लगते हैं। इसकी फलियाँ 1 से 2 फीट तक लम्बी चपटी चौडी तथा कठोर होती हैं कच्ची अवस्था में ये हरे रंग की तथा पकने पर कत्थई रंग की हो जाती हैं। फलियों के अन्दर 8 से 20 तक की संख्या में कत्थई रंग के चपटे व कुछ मोटे आकार के गोल बीज थोडी – थोडी दूरी पर लगे होते हैं।

गुलमोहर की पत्तियाँ पशु चारे के रूप में चाव से खाते हैं। लकडी ईंधन के रूप में उपयोग की जाती हैं। इसकी लकडी बहुत कमजोरी होती जोकि फर्नीचर आदि बनाने के काम में इस्तेमाल नहीं की जा सकती है।

गुलमोहर के लिए नमी वाली जमीन सबसे अच्छी रहती है। परन्तु सिचाई की अच्छी व्यवस्था करने पर यह क्षारीय व कमजोर भूमि मे भी उगाया जा सकता है गुलमोहर का पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

ढाक

देशी नाम ढाक, फ्लाश, छीला, खांकरा, टेसू
वैज्ञानिक नाम *Butea monosperma* ब्यूटिया मोनोस्परमा
उपयोगी भाग पत्ते , गौंद , फूल, बीज ,छाल, लकडी

ढाक का पेड मध्यम आकार का समूह में उगने वाला 4 से 6 मीटर ऊँचा होता है। इसका तना 2–3 मीटर मोटा खोखला व टेढा मेंढा होता है। इसकी छाल भूरे रंग की होती है। जिसे काटने पर (टाँचने पर) लाल रंग का तरल (रेजिन) निकलता है उसके पत्ते संयुक्त तथा त्रिपर्णक होते है। इसमें पतझड नवम्बर से दिसम्बर के मध्य होता है। नई पत्तियाँ अप्रैल से मई के मध्य आती है। पतझडी अवस्था में फूल लगते है कलिया स्याही काले रंग की तथा फूल गहरे लाल ,नारंगी, लाल तथा किसी–किसी पेंड पर सफेद भी आते है। फूल आने पर सारा पेड फूलो से ढक जाता है। जो कि जंगल मे लगी आग जैसा दिखाई देता है। फूल गन्धहीन होते है इसकी फलियां पीले हरे रंग की आती है। तथा पकने पर मखमली चमकीले भूरे रंग के बालो से ढकी होती है। फली के अगले सिरे पर मात्र एक बीज रहता है।

इसके पत्ते, फूल, छाल , बीज, गोंद उपयोग में लिए जाते है। तने पर टेढे टाँचं करने पर गोंद प्राप्त होता है। इसे कणी, कमरकसा, बंगालकिनो, कहते है। यह ताकत वर गोन्द होता है कमर दर्द व जोडों के दर्द में उपयोगी होता है। सर्दियो में गोन्द को आटे व घी के साथ मिलाकर लड्डू बनाये जाते है। बीज खाने से पेट के कीडे मर जाते है फूलो से होली पर नारंगी, पीला प्राकृतिक रंग बनाते है। पत्ते चारे के रूप मे उपयोग होते है। इनसे पत्तल व दोने बनाये जाते है। इसकी लकडी पानी से कम गलती है इस लिए कुए पर ढाणे की पाट व मूसला तथा बाल (कीली) बनाने के काम मे ली जाती है। हिन्दुओ में ढाक की लकडी अनुष्ठानो मे काम मे ली जाती हे।

इसके लिए नमी वाली दोमट क्षारीय तथा काली मिटटी अच्छी रहती है नालो के किनारे पहाड की तलहटी में अधिक मिलता है इसमे काटने के बाद पुनः उग आने की क्षमता बहुत अधिक होती है इसलिए कटने के बाद भी जड से पुनः नयी शाखाएं फूट कर बढने लगती है। नया पौधा बीजों से तैयार किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

देशी बबूल

देशी नाम — देशी बबूल, कीकर, बौली
वैज्ञानिक नाम — *Acacia nilotica* अकेशिया निलोटिका
उपयोगी भाग — बीज, जड, गोंद व फलियाँ ,पत्ते, लकडी

देशी बबूल राजस्थान की गर्म व शुष्क जलवायु में प्रायः सभी जगह बहुतायत से पनपता है। इसकी सामान्यतः दो जातियां पाई जाती है एक का छत्रप गोल छतरी की तरह फैला हुआ होता है (अकेशिया निलोटिका) तथा दूसरा (अकेशिया कुप्रेसीफोरमिस) रामकांटा/सूलिया बबूल इसका तना सीधा शाखाएं तनें के समान्तर ऊपर की तरफ बढती है। बबूल के पेड की ऊँचाई 5 से 10 मीटर तक की होती है। छाल गहरे कत्थई व काले रंग की होती है। इसकी पत्तियाँ पंख जैसी गहरी तथा संयुक्त होती है। पत्ती के आधार पर शाखाओ पर दो सफेद लम्बे सफेद रेग के कांटे होते है जिसकी नांक बादामी होती है। फूल पीले रंग के चमकदार होते हे। इसका गोल फूल कई फूलो का समूह होता है। पतझड नाम मात्र का मई मे होता है। साथ ही नई मुलायम पत्तियाँ आ जाती है। फली चपटी भूरी बीज के कारण गठीली होती है। इसके पेड पर बुगले व चीटें बहुत रहते है बयाँ चिडिया इसकी शाखाओं के अन्त में अपने लटकने वाले सुन्दर धोंसले बनाकर रहती है।

इसके पत्ते, बीज,जड, गोंद व फलियाँ,उपयोगी है। इसकी कच्ची मुलायम फलियो की सब्जी बनाकर खाई जाती है। इसका गोंद दवाई बनाने व खाने मे काम आता है इसकी शाखाओ से दातून करने पर दांतो के रोग दूर हो जाते है। छाल चमडा रंगने के काम आती है। लकडी जलाने व फर्नीचर बनाने के काम आती है। यह नमी कम सोंखती है। इसकी शाखाओं से खेतो की बाड भी की जाती है। जिससे जानवरो से फसलो की सुरक्षा की जा सके। इसके पत्ते व फलियां पशु बहुत चाव से खाते है।

बबूल नम व काली मिटटी मे अच्छा उगता है। वैसे तो सभी प्रकार की मिटटी मे पाया जाता है। चट्टानो व पथरीली भूमि मे मुश्किल से पनपता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता हैं।

धोंक

देशी नाम — धोंक, धोंकडा, धौं
वैज्ञानिक नाम — *Anogeissus pendula* एनोगीसेस पेंडुला
उपयोगी भाग — गोंद व पत्ते, लकडी

यह पेड समूह मे सघन जंगल के रूप में अरावली की पहाडियों पर उगता है। तथा इसकी ऊँचाई 8–10 मीटर तक हो जाती है। इसकी जडे फैली हुई तथा मजबूत होती है। इसका तना छोटा तथा बहुधा टेढा–मेढा होता है इसकी छाल धूसर व चिकनी होती है पतझड जनवरी–मार्च मे होता है गिरने से पहले पत्तियाँ लाल या बैंगनी रंग की हो जाती है हल्की सी मामूली बारिश मे भी नई पत्तियाँ आ जाती है। जो प्रारम्भ में सफेद व चमकीली होती है। तथा बाद मे हरी हो जाती है। फूल धूसर सफेद छोटे व गोल होते है इसके फल गोल व छोटे तथा कत्थई रंग के आधार पर पीले होते है इसकी शाखाएं नीचे झुकी होती है

इसकी पत्ती ,लकडी व गोंद उपयोगी होता है। इसका गोंद सफेद रंग का होता है, गोंद खाने व दवाईयाँ बनाने के काम आता है। पत्तियाँ चारे के लिए बहुत उत्तम है अकाल के समय इसकी पत्तियाँ पशुओ को खिलाई जाती है जंगली पशुओ सांभर, चीतल,नील गाय भी इसकी पत्तियों को बडे चाव से खाती है। इसकी लकडी में झटका सहने (प्रघातरोधी) गुण बहुत होता है इसलिए औजारो के हत्थे बनाये जाते है। छप्पर बनाने मे इसकी लकडी का उपयोग होता है इसका ईंधन भी बहुत अच्छा होता है। इसकी लकडी की चारपाई बनाई जाती है। इसकी पत्तियाँ में टैनिन नामक पदार्थ होता है जिससे चमडा रंगने के काम आती है।

धोंक का पेड घाटियों मे तथा पहाडी ढलानो पर पैदा होता है पत्थरीली, कंकरीली ,भूमि मे भी आसानी से पनप जाता है। इसका पौधा जंगली अवस्था में बीजों के प्रकार्णन से पैदा होता है।

Scanned with OKEN Scanner

नींबू

देशी नाम नींबू
वैज्ञानिक नाम *CitrusAurantifolia* साईटरस एयुरन्टीफोलिया
उपयोगी भाग फल

नीबू का पेड मध्यम छोटे आकार का होता है। इसकी ऊँचाई 2 से 3 मीटर तक होती हैं इसका पेड का क्षत्र फेला हुआ होता हैं। इसके पत्ते गहरे हरे रंग के गोलाई लिए हुए आगे से नुकीले , चपटे तथा चिकने होते हैं। मसलने पर इनमें तेज खुशबु आती है। इसकी छाल का रंग सफेदी लिए धूसर होता है इस पर हरे रंग के छोटे–छोटे कांटे होते है जो कि बहुत मजबूत होते है। नीबू के पेड पर सफेद रंग के फूल गुच्छों में आते है। इसका फल गोल होता हे जो कि कच्ची अवस्था में गहरा हरा तथा पकने पर पीले रंग का हो जाता है। इसके रस का स्वाद खट्टा होता है। इसके अन्दर सफेद रंग के 8 से 10 तक बीज होते हैं। कुछ किस्म के नींबू बगैर बीज के भी होते हैं। नींबू का फल बाजार में हर मौसम में उपलब्ध रहता है।

नींबू के फल का उपयोग अचार बनाकर खाने में तथा शरबत के रूप में इस्तेमाल किया जाता है यह भूख बढाने वाला कब्ज व अरूची दूर करने के लिए उपयोग किया जाता हैं। नींबू के रस को शहद के साथ आँखों में अंजन करने से आँखों का फूला व मोतिया बिन्द ठीक होता हैं। नींबू का रोजाना इस्तेमाल फ्लोराइड की अधिकता से होने वाली बीमारियों को रोकता है। नींबू के रस को सुखाकर खट्टा रसायन टार्टरी तैयार करते हैं जो कि औषधी तैयार करने में उपयोग होता है।

यह कंकरीली पथरीली सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो सकता है परन्तु जलोढ व काली भूमि मे नही पनप पाता है इसकी जडे गहरी व फैली हुई होती है। नया पौधा बीज से तैयार होता है। परन्तु कलम चढाने पर फल के गुणों मे सुधार होता है अतः इसके कलमी पेड लगाये जाते हैं इसकी शाखाओं से भी नया पौधा तैयार किया जाता है।

फराश

देशी नाम फराश
वैज्ञानिक नाम *Temerics Aphaila* टेमेरिक्स अफाइला
उपयोगी भाग गोंद व छाल ,पत्ते, लकडी

यह अफ्रीकी मूल का वृक्ष है जो कि राजस्थान की गर्म व शुष्क जलवायु में प्रायः सभी जगह बहुतायत से पनपता है। जो कि रेत के टीलों पर व मैदानी इलाकों में भी आसानी से उगता हैं। यह सदाबहारी बहुशाखीय शंकुधारी वृक्ष है। इसका तना सीधा शाखाएं तनें के समान्तर फैली हुई ऊपर की तरफ बढती है तथा नीचे की तरफ लटकती हुई होती है। फराश के पेड की ऊँचाई 15 मीटर तक की हो जाती है। छाल गहरे कत्थई व काले रंग की होती है जों की गहरी धारियों में फटी हुई होती है। इसकी पत्तियाँ पंख जैसी गहरी हरी तथा संयुक्त होती है। फूल गुलाबी रंग के आकार में छोटे तथा शाखाओं के आखीर में गुच्छों में लगते हैं। पतझड नाम मात्र का जनवरी फरवरी में होता है। नई मुलायम पत्तियाँ अप्रेल मई में आती है। फल छोटे कैपसूल के आकार के दिसम्बर से फरवरी के मध्य लगते हैं। इसके बीज छोटे आकार के होते हैं जिनके सिरे पर छोटे –छोटे बालों जैसा गुच्छा होता है जो उनके प्रकीरणन में सहायक होता है। रात के समय वृक्ष की शाखाओं से नमकीन पानी की बूदे टपकती रहती हैं जिस कारण इस वृक्ष की टहनियों व शाखाओं पर सफेद रंग की नमकीन परत सी जम जाती है। यह वृक्ष अग्निरोधी भी होता हैं।

इसके उपयोगी भाग पत्तियाँ, छाल ,लकडी व गोंद है। इसका गोंद दवाईयाँ बनाने में उपयोग किया जाता है। इसकी पत्तियों छाल व फूलों से प्राकृतिक रंग भी बनाया जाता है। इसकी पत्तिया अच्छा चारा नही होती परन्तु ऊँट इसके पत्तो को खा लेता है। इसके पत्तों में बहुत अधिक मात्रा में टेनिन होता हैं जिस कारण पत्तियाँ व छाल चमडा रंगने के काम आता है। लकडी जलाने के काम में ली जाती है परन्तु यह थोडा देरी से आग पकडती है इसके अलावा फर्नीचर बनाने के लिए अच्छी होती है लकडी की पेटियाँ, पार्टिशन बोर्ड आदि बनाये जाते है तथा इसकी लकडी से कृषि उपकरणों के हत्थे आदि बनाये जाते हैं।

फराश बलुई व दौमट मिटटी में अच्छा उगता है। वैसे तो सभी प्रकार की मिटटी मे पाया जाता है। चटटानो व पथरीली भूमि मे मुश्किल से पनपता है। नया पौधा बीज से तथा कलम से व नये कल्लों जो कि जडों से फूटते हैं से तैयार किया जाता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

बहेडा

देशी नाम बहेडा
वैज्ञानिक नाम *Terminalia bellirica* टर्मीनेलिया बेलिटिका
उपयोगी भाग बीज, फल ,पत्ते, लकडी

यह एक पतझडी वृक्ष है इसकी ऊँचाई 25 मीटर तक होती है इसका तना 3 मीटर तक मोटा हो जाता है। तथा खुरदरा व राख के से रंग का होता है इसमे सीधी धरियां होती है। पत्तियाँ खुरदरी हरी शाखाओं के अन्तिम सिरे पर गुच्छे मे होती है नवम्बर से जनवरी के मध्य पतझड होता है नई पत्तियाँ ताम्बे जैसे रंग की आती है पत्तियो के साथ ही सफेद हरे रंग के उंगली जैसे गोल लम्बे पुष्प क्रम मे लगते है। इसके फल गोल धूसर रंग के होते है जिसमे पीला व कडवा गूदा भरा होता है इसकी जडे गहरी होती हे।

इसके उपयोगी भाग फल, लकडी, पत्ते होते हैं। बहेडा के फलों को त्रिफला चूर्ण बनाने में काम आता है। इसके फल का चूर्ण नेत्र व पेट के रोगो मे उपयोगी है। पशुओं को इसका चूर्ण छाछ से खिलाने पर उनके पेट का दर्द ठीक हो जाता है। इसकी पत्तियाँ चारे के काम आती है लकडी ईंधन के रूप मे उपयोग होती है प्लाईवुड तथा फर्नीचर बनाने के काम आता है। लकडी की चारपाई भी बनाई जाती हे। इसके फल के गूदे मे टेनिन पदार्थ होता है जो चमडा रंगने व कपडे की छपाई में काम आता है।

बहेडे के वृक्ष के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है तथा यह पत्थरीली भूमि मे भी आसानी से पनप जाता है। भूमि मे जल निकास अच्छा होना चाहिए। नया पौधा इसकी गुठली (बीज) से तैयार होता है।

बंगाली बबूल

देशी नाम बंगाली बबूल
वैज्ञानिक नाम *AcaciaAuriculiformis* अकेशिया औरीकुलीफोर्मिस
उपयोगी भाग छाल व लकडी

बंगाली बबूल का वृक्ष बहुत तेजी से बढने वाला होता है। यह एक सदाबहार सजावटी मध्यम आकार का वृक्ष होता हें इसकी ऊँचाई 15 मीटर तक हो जाती है। तना टेढामेढा बढता है जो कि 3 से 4 मीटर तक बढ जाता हैं तथा शाखाऐं ऊँचाई पर जाकर निकलती हैं। इसकी छाल धूसर सफेद रंग की होती है तथा वृक्ष की उम्र बढने पर गहरे धूसर रंग की धारियाँ बन जाती है। इसकी पत्तियाँ सफेदी लिए हरी तथा भालाकार व माँसल होती हैं। पत्ते पीले पडकर झडते रहते हैं तथा साथ ही नई मुलायम पत्तियाँ आ जाती है। फूल लगभग 10 सें, मी, उंगली जैसे गोल जुलाई से अक्टूबर के मध्य आते है। फलियाँ चपटी ,कडी तथा बीच से ऐंठी हुई होती हैं इसकी फलियाँ जनवरी से अप्रेल में पकती हैं पकने पर फलियाँ कत्थई रंग की हो जाती हैं।

इसकी छाल व लकडी उपयोगी है। जानवर इसकी पत्तियाँ नही खाते। इसकी लकडी जलाने व बल्ली आदि बनाने के काम आती है। इसकी छाल में टेनिन नामक त्तव होता हैं अतः चमडा रंगने के काम आती है। इसकी लकडी से कागज भी तैयार होता है। पत्तियाँ भूमि की उपजाऊ क्षमता को बढाती है।

बंगाली बबूल का वृक्ष उपजाऊ अच्छे जल निकास वाली सामान्यतः किसी भी किस्म की भूमि अच्छी रहती है। जलोढ भूमि पर यह नही पनपता वैसे तो सभी प्रकार की मिटटी मे बेाया जा सकता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

बाँस

देशी नाम बाँस
वैज्ञानिक नाम *Dendrocalamus strictus* डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस
उपयोगी भाग बीज, गोंद व पत्ते, तना

अरावली पर्वत श्रृंखला मे पहाडी ढलानो पर तथा चोटियों पर पाया जाता है। इसकी दो प्रजातियाँ पाई जाती हैं मानवेल इसमें काँटे नही होते व कार्टस इसमें काँटे होते हैं। इसे बाम्बुसा एरून्डिनेसिया के वैज्ञानिक नाम से जाना जाता हैं। बाँस हरा , सीधा , लम्बा , और वजन में हल्का तथा बहुत मजबूत होता है। यह पतझडी होता है। कम वर्षा वाली कठोर भूमि वाले भाग में पैदा होने वाला बोस मजबूत व ठोस होता है। कच्चा बाँस हरा तथा पकने पर पीला पडने लगता है। बाँस की ऊँचाई 6 से 10 मीटर तक होती है। इसकी पत्तियों का अग्रभाग नुकीला होता है। बांस झुरमुट में पैदा होता और बढता हैं। इसकी पत्तियाँ दिसम्बर से मार्च के मध्य पीली पडकर गिर जाती हैं नई पत्तियाँ अप्रेल से मई के बीच आती हैं। नई पत्तियों के किनारे बहुत धारदार होते हैं तथा गहरे हरे रंग की होती हैं। बाँस पर 30 वर्ष के बाद फूल आता है तथा इसके बाद सारा बाँस का झुरमुट मर जाता हैं। इसका फूल तने की गाँठों पर छोटे गोल नुकीले मुन्डों में लगता है। बाँस का बीज जौं व गेहू के दाने जैसा होता हैं तथा अप्रेल व मई में पकता है।

इसकी पत्तियाँ व लकडी व गोंद , बीज, उपयोगी होता है। इसके तने से प्राप्त गोंद बंशलोचन कहलाता है जो कि दवाईयाँ बनाने में काम आता है। यह बलवर्द्धक होता है। यह कृमि रोग कुष्ठ रोग में अफारा तथा कफ व दस्तरोग में उपयोग किया जाता है। बाँस से टोकरी व अन्य घरेलु उपयोग का समान औजारों के हत्थे लाठी आदि बनाये जाते है इसके अलावा छप्पर चटाई बाँसुरी खिलोने आदि बनाये जाते हैं अकाल के दिनों में आदिवासी लोग इसके बीजों से आटा बनाकर खाते हैं। पत्तियों को चारे के रूप में इस्तेमाल करते हैं। बाँस से कागज भी बनाया जाता है।

बाँस के लिए काली कल्लर जमीन उपयुक्त होती है इसका वृक्ष नमी वाली पत्थरीली पहाड की ढलान कम गहरी मिट्टी नालों के किनारे पर भी आसानी से पनपता है। इसकी गाँठ वाली अच्छे कल्ले वाली डाल काट कर लगाने से नया पौधा तैयार हो जाता है। बीज से भी इसका पौधा तैयार किया जाता है।

बिलायती कीकर

देशी नाम बिलायती कीकर
वैज्ञानिक नाम *Prosopis juliflora* प्रोसोपिस जूलीफलोरा
उपयोगी भाग छाल, गोंद व फलियाँ ,पत्ते, लकडी

बिलायती बबूल राजस्थान की गर्म व शुष्क जलवायू में प्रायः सभी जगह बहुतायत से पनपता है। यह सदाबहार मध्यम आकार का होता है। बबूल के पेड की ऊँचाई 5 से 10 मीटर तक की होती है। यह काँटेदार पेड है। इसकी मुख्य जड 20 मीटर की गहराई तक चली जाती हैं तथा अगल– बगल की जडे भी काफी गहराई तक जाती हैं। इसकी शाखाऐं टेढी मेढी तथा नीचे की और झुकी होती हैं। काटने पर यह तेजी से बढता हैं। इसकी छाल गहरे कत्थई व काले रंग की कटी – फटी होती है। इसकी पत्तियाँ पंख जैसी गहरी तथा संयुक्त होती है। पत्ती के आधार पर शाखाओ पर दो हरे तथा पकने पर पीले रंग के मजबूत काँटे होते हैं। पुराने पेडों में काँटे लगभग समाप्त हो जाते हैं। फूल पीले रंग के गोल तथा चमकदार होते हे। इसका गोल फूल कई फूलो का समूह होता है। जो कि मुख्यतः जुलाई से अक्टूबर के मध्य आते हैं कुछ पेडों में फूल फरवरी मार्च में भी आते हैं। इसकी फली चपटी व गठीली ,मांसल तथा पकने पर पीली हो जाती है इसके बीज 10 से 30 तक की संख्या में कत्थई भूरे रंग के होते हैं। फलियों का गूदा हल्का मीठा होता है। इसकी पत्तियों में जहरीला रसायन होने के कारण इसके नीचे कोई अन्य वृक्ष धास झाडी आदि नही पनपती।

इसके पत्ते व फलियाँ व लकडी, छाल, गोंद उपयोगी है। पत्तियाँ पशु बहुत कम खाते है। बकरियाँ केवल कोमल मुलायम पत्तियों को ही खाती हैं। इसकी पकी फलिया बहुत पौष्टिक होती हैं जिनकों पशु चाव से खाते हैं। इसका गोंद दवाई बनाने मे काम आता है। छाल में टेनिन नामक रसायन होता है छाल चमडा रंगने के काम आती है। लकडी जलाने के काम आती है। इसकी शाखाओं से खेतो की मजबूत बाड भी बनाई जाती है। जिससे जानवरो से फसलो की रक्षा की जा सके।

बिलायती बबूल नम व काली मिटटी मे अच्छा उगता है। वैसे तो सभी प्रकार की मिटटी मे पाया जाता है। चटटानो व पथरीली भूमि मे भी अच्छा पनपता है। नया पौधा मूलमुडं से जडों के कल्लों से व बीज से तैयार किया जाता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

भिलावा

देशी नाम भिलावा , भेला
वैज्ञानिक नाम *Semecarpus Anacardium* सेमकारपस एनाकरेडियम
उपयोगी भाग बीज, फल, गोंद, लकडी

यह एक पतझडी वृक्ष है , इसकी ऊँचाई 30 मीटर तक होती है इसका तना 3 मीटर तक मोटा हो जाता है तना पीलापन लिए धूसर रंग का होता है। शाखाओं पर तीक्ष्ण रोये होते हैं। इसकी पत्तियाँ खुरदरी सी हरी शाखाओ के अन्तिम सिरे पर गुच्छे मे होती है। पत्तियाँ काफी बडी व चौडी होती हैं इनका आकार लम्बाई में डेढ से दो फीट तक तथा चौडाई में आधा से एक फिट तक होता है। नवम्बर से जनवरी के मध्य पतझड होता है। मार्च माह के अन्त तक नई पत्तियाँ निकल आती हैं। पत्तियों के साथ ही हल्का हरा रंग लिए पीले रंग के फूल आते है। इसका फल लगभग एक इंच लम्बा व लगभग इतना ही चौडा चमकीले काले रंग का फल लगता हैं।

भिलावा की लकडी, फल, गोंद उपयोगी होते है। बगैर शौधन के भिलावा के फल का उपयोग नही करना चाहिए। भिलावा के फल से तेल निकाला जाता है जो कि गठिया वात की दवाई बनाने के काम आता है। गोंद यौन रोग , मानसिक कमजोरी व कुष्ठ रोग की दवाई बनानें में काम आता है। इसे गर्भाशय में लगा कर गर्भपात भी कराते है। लकडी ईंधन के रूप मे उपयोग होती है तथा फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसकी लकडी से चारपाई भी बनाई जाती हे।

भिलावा के वृक्ष के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है तथा यह पत्थरीली कठोर भूमि मे भी आसानी से पनप जाता है। भूमि मे जल निकास अच्छा होना चाहिए। नया पौधा गुठली / बीज से तैयार होता है।

महुआ

देशी नाम महुआ
वैज्ञानिक नाम *Madhuca longifolia* मधुका लोन्जीफोलिया
उपयोगी भाग बीज, गोंद, फूल ,पत्ते, लकडी , तेल

महुआ का वृक्ष जंगली अवस्था में उगा हुआ मिलता है। यह बडे आकार का वृक्ष होता है। इसकी ऊँचाई 4 से 12 मीटर तक हो जाती है। पुराने वृक्ष काफी बडे हो जाते हैं। इसकी शाखाऐं काफी मजबूत होती हैं। पत्ते छोटी–छोटी टहनियों के आखिर में गुच्छों में लगते हैं।पत्तों का रंग गहरा हरा होता है। परन्तु नये पत्ते हल्के पीले रंग के हो जाते हैं। इसकी छाल धूसर व कत्थई रंग की होती है जो आडी टेढी धारियों के रूप में कम गहराई में कटी फटी होती है। इसके वृक्ष पर सफेद रंग के फूल शाखा के अन्त में गुच्छों में आते हैं तथा सूखने पर गहरे कत्थई तथा पीले रंग के हो जाते हैं। जो कि काफी मीठे होते हैं। इसके फल 1 से 2 ईंचं आकार के अण्डे के आकार के हरे व पीले तथा गूदेदार फल लगते हैं। इसके बीज गहरे कत्थई रंग के होते हैं। जिसके अन्दर सफेद रंग का बीजपत्र होता हैं।

इसके पत्ते, छाल लकडी व फूल उपयोगी भाग है। महुआ के पत्ते व फूल खाँसी तथा अंडकोशों की सूजन में गर्म करके सिकाई करने के काम आते है। महुआ के फूलों को हलका सेक कर धी मिला कर बवासीर के रोगियों को खिलाने स रोग ठीक होता है। इसका फूल बहुत पौष्टिक होता हैं। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है। इसके फूलों से देशी शराब बनाकर लोग पीते हैं। फूलों को सुखाकर आदिवासी इलाके में लोग आटे में मिलाकर रोटी बनाकर खाते हैं महुआ की लकडी को ईधन के रूप मे भी उपयोग किया जाता है तथा यह कृषि के औजारो के हत्थे व फर्नीचर बनाने में काम ली जाती है। पत्तियाँ चारे के रूप मे उपयोग की जाती है।

महुआ का वृक्ष नमी वाली जमीन में उगाया जा सकता है, परन्तु यह थोडी क्षारीय व कमजोर भूमि मे भी उग सकता है। इसका पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

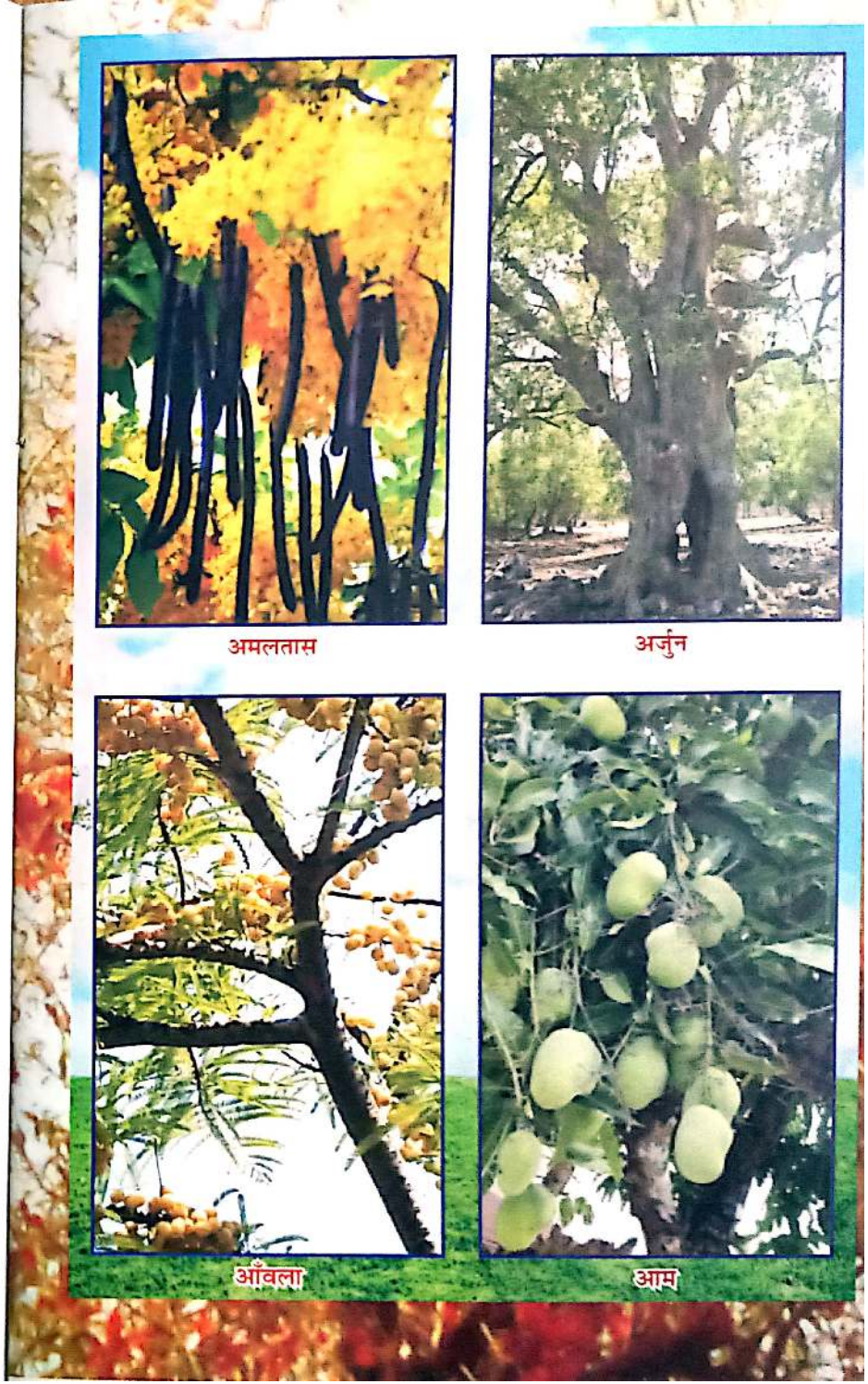
मिजारी

देशी नाम मिजारी
वैज्ञानिक नाम *Cassia ciama* केशिआ सिआमा
उपयोगी भाग पत्ते, लकडी

इसका पेड. सदाबहार मध्यम आकार का तेजी से बढने वाला लगभग 15 से 20 मीटर ऊँचाई का होता है। इसका छत्र बडा ओर छायादार होता है। यह पेड हमेशा हरा रहता है। मिजारी के पेड का मुख्य तना 2–3 मीटर ऊँचा होता है जिसके ऊपर से शाखायें निकलती है। शाखाऐं सहज टूटने वाली कमजोर होती है। टहनियो पर पत्तियाँ संयुक्त व धनी होती है जो कि गहरी छाया देती हैं। पत्र पतले आगे से गोलाकार होते है। पत्तियाँ पीली पड कर गिरती रहती हैं। इस पेड की जड बहुत गहरी होती है। पेड पर अप्रेल व जून व अक्टूबर से दिसम्बर तक पीले बडे सजावटी फूल गुच्छो में वर्ष में दो बार आते है। इसकी फलियाँ चपटी व एक फिट तक लम्बी होती है तथा गुच्छों में लगती है। फलियाँ मार्च से अप्रेल के मध्य पकती है तथा कत्थई मटमैले रंग की हो जाती है। इनमे गोल व चपटे भूरे रंग के कठोर आवरण वाले 8 से 10 बीज होते है।

इसके पत्ते , लकडी उपयोगी है। इस पेड की पत्तियाँ दवाई बनाने के काम मे आती है। मिजारी की पत्तियों को चारे के आभाव के दिनों में तथा अकाल के समय पशुओ को खिलाया जाता है। इसकी सूखी हुई टहनियाँ ईंधन के रूप मे जलाने के काम आती है। इसकी लकडी कमजोर परन्तु दीमक रोधी होती है। यह लकडी के हल्के फर्नीचर आदि बनाने के काम में ली जाती है।

मिजारी को अच्छे जल निकास वाली गहरी मिटटी उपयुक्त रहती है। खनन वाले इलाकों में भी अच्छी प्रकार पनपता है। इसके लिए क्षारीय भूमि उपयुक्त होती है। इसका वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी मे उगाया जा सकता है। परन्तु बलुई दोमट भूमि में अधिक तेजी से पनपता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।



Scanned with OKEN Scanner


खेजड़ी
गूगल
देशी बबूल
धोक
गुलमोहर
ढाक
लीलू
फलाश



बहेडा



बंगाली बबूल



बांस



विलायती कीकर



भिलावा



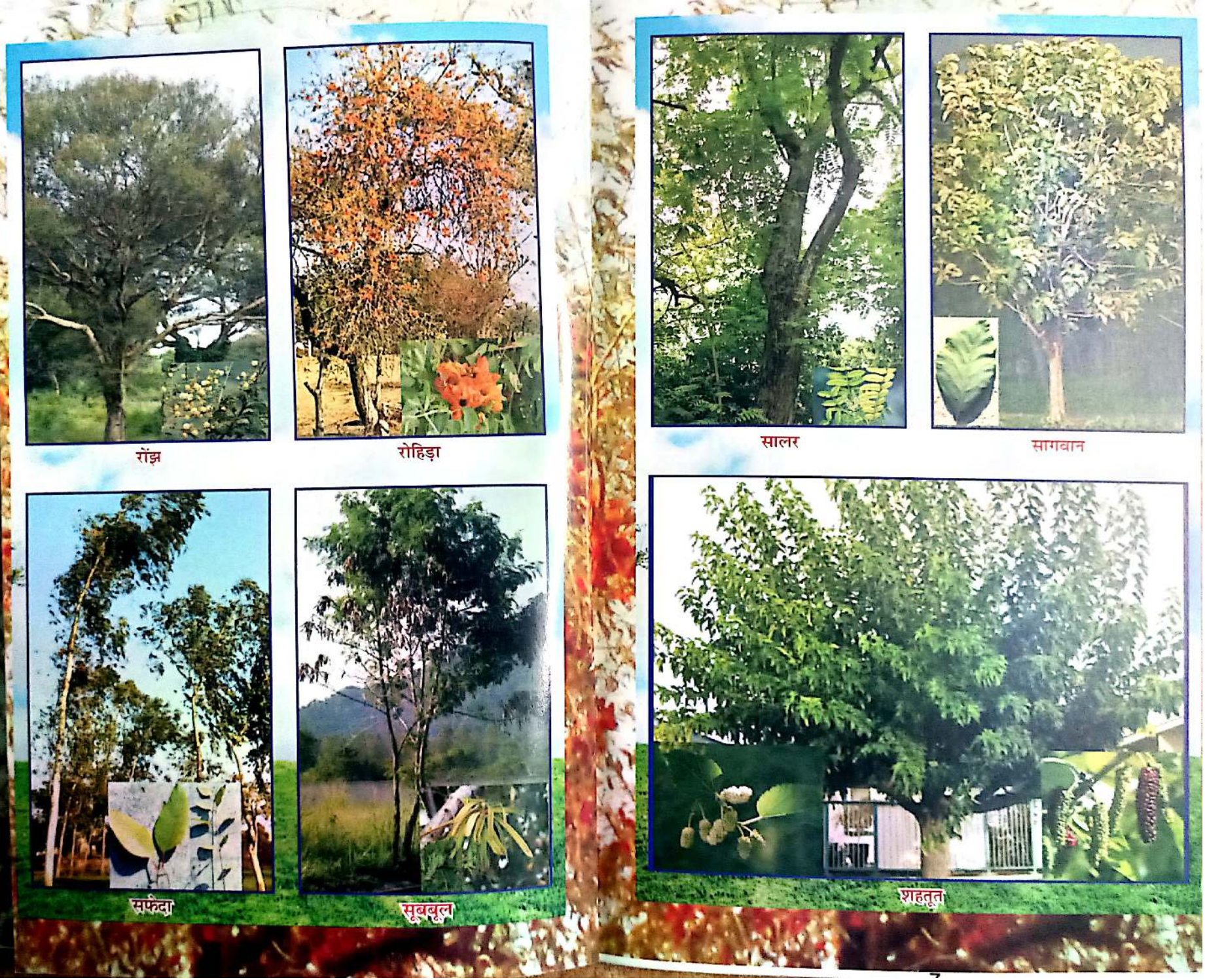
महवा



मिजारी



मोलसिरी



Scanned with OKEN Scanner



मोलसिरी

देशी नाम मोलसिरी
वैज्ञानिक नाम *Mimusops elengi* मिम्युसोपस एलेंगी
उपयोगी भाग बीज, छाल,पत्ते, लकडी

मोलसिरी का वृक्ष जंगली अवस्था में उगा हुआ भी मिलता है। यह बडे आकार का वृक्ष होता है। इसकी ऊँचाई 8 से 15 मीटर तक हो जाती है। पुराने वृक्ष काफी बडे हो जाते हैं। इसकी शाखाऐं काफी मजबूत होती हैं। पत्ते छोटी–छोटी टहनियों के आखिर में गुच्छों में लगते हैं। पत्ते कुछ कठोर होते हैं पत्तों का रंग गहरा हरा होता है। परन्तु नये पत्ते हल्के पीले रंग के होते हैं। इसकी छाल धूसर व कत्थई रंग की होती है जो आडी टेढी धारियों के रूप में कम गहराई में कटी फटी होती है। इसके वृक्ष पर हल्का पीलापन लिए सफेद रंग के छोटे–छोटे फूल शाखाओं के अन्त में गुच्छों में आते। इसके फल छोटे आकार के हरे व पीले तथा पक कर लालिमा लिए पीले रंग के हो जाते है। फल खाने पर हल्के मीठे होते हैं इन में गूदा नाम मात्र का ही होता हैं। एक फल में आम तौर पर एक ही बीज होता हैं। इसके बीज धूसर रंग के होते हैं। जिसके अन्दर सफेद रंग का बीजपत्र होता हैं। फूल व फल वर्षा ऋतु में आते हैं।

मौलसिरी की छाल, बीज, पत्ते उपयोगी होते है। इसकी छाल का काढा बनाकर पुराने बुखार के रोगी को देने से बुखार ठीक हो जाता है। इसके बीज व छाल का उपयोग दवाई बनाने में किया जाता हैं। इसकी शाखा की दातून करने से दाँत बहुत मजबूत हो जाते हैं। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है। मौलसिरी की लकडी को ईधन के रूप मे भी उपयोग किया जाता है तथा यह कृषि के औजारो के हत्थे व फर्नीचर बनाने में काम ली जाती है। पत्तियाँ चारे के रूप मे उपयोग की जाती है। इसको छाया के लिए लगाया जाता है।

मौलसिरी का वृक्ष नमी वाली जमीन में उगाया जा सकता है, अच्छे जल निकास वाली मटियार दौमट भूमि इसके लिए उपयुक्त रहती है। इसका पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

रोंझ

देशी नाम रोंझ , सफेद कीकर
वैज्ञानिक नाम *Acacia leucophloea* अकेशिया ल्यूकोफलोइया
उपयोगी भाग गोंद व फलियाँ ,पत्ते, लकडी

रोंझ का पेड बबूल के कुल का पेड है। इसके पत्ते भी बबूल की तरह होते है। इसकी छाल का रंग सफेदी लिए धूसर होता है इस पर हलके बादामी रंग के कांटे होते है। जो कि पत्तियों के मूल पर आते है जो कि बहुत मजबूत होते है इस पर सफेद धूसर मटमैले फूल आते है। इसकी फलियाँ पतली चपटी हरे रंग की होती है। पकने पर बादामी रंग की हो जाती है। जिनमे छः से सात तक बीज होते है। अरावली की पहाडी क्षेत्रों मे थोडा बहुत सभी स्थानों पर मिलता है। इसके तने व शाखाओ पर गांठो जैसे उभार होते है जो कि कींटो की इल्लीयो द्वारा बनाये जाते है। इसके कांटे बहुत तीक्ष्ण होते हैं।

रोंझ की पत्ती, फलियाँ, गोंद व लकडी उपयोगी होती है। इसके गोंद का उपयोग दवाई बनाने में किया जाता है। इसकी पत्तियाँ व फलियाँ पशुओं के चारे के रूप मे उपयोग होती है परन्तु ज्यादा मात्रा में खाने पर बकरियों में विषैली साबित होती हैं इनको ज्यादा खाने से बकरियों का पेट फूल जाता है और ये मर भी सकती हैं। लकडी का उपयोग ईंधन व खेतों की बाड करने मे होता है।

यह कंकरीली तथा पथरीली सभी प्रकार की मिट्टी मे हो सकता है परन्तु रेतीली व क्षारीय भूमि मे नही पनप पाता है इसकी जडे गहरी व फैली हुई होती है। नया पौधा बीज से तैयार होता है।

रोहिडा

देशी नाम रोहिडा
वैज्ञानिक नाम *Teconella undulata* टीकोनेला अन्डूलेटा
उपयोगी भाग छाल,फूल

थार के रेगिस्तान में रेतीले टीलो के बीच प्रचुर संख्या में रोहिडे का वृक्ष मिलता है। इसकी ऊँचाई लगभग 8 मीटर होती है। इसकी जडे काफी गहरी चली जाती है। इसलिए कम पानी वाली जगह भी आसानी से पनप जाता है। इसकी जडों में मिटटी को बाँधे रखने की अदभुत क्षमता होती है। इसकी नई टहनियों में सफेद रोम की परत होती है। इसकी छाल धूसर रंग की खुरदरी होती है। इसका तना टेढा मेढा होता हैं व पुराने वृक्षों में ज्यादातर खोखला हो जाता है। यह वृक्ष अग्निरोधी होता हैं तथा जंगल में आग लगने पर भी बच जाता हैं।

इसके वृक्ष पर फूल जनवरी से अप्रैल के मध्य आते हैं। इसका फूल काफी बडा व पीले नारंगी या लाल रंग के तथा देखने में काफी सुन्दर होता है। यह राजस्थान का राजपुष्प कहा जाता हैं। फूल जनवरी से अप्रेल तक आते हैं। इसका फल लम्बा व पक कर फटने वाला होता है। इसके बीज सफेद झिल्ली वाले होते हैं जो कि हवा में उडकर काफी दूर तक चले जाते हैं इस प्रकार इनका प्रकीर्णन होता है।

इसकी छाल मे औषधीय गुण होते हैं। यह खांसी, बुखार व फोडे फुंसियों में काम आती हैं इसकी छाल में टेनिन नामक पदार्थ होता हैं जिस कारण यह चमडा रंगने में काम आती है। इसकी लकडी पर बहुत अच्छी नक्कासी की जाती है जिससे सुन्दर फर्नीचर बनाये जाते हैं। इस कारण इसकी बडे पैमाने पर कटाई हुई है अतः इनकी संख्या बहुत तेजी से घट रही है।

इसके लिए बलुई भूमि उपयुक्त होती हैं यह पहाडी क्षेत्रों मे नही पनपता। यह बालू के टीलो में खूब पनपता है। रोहिडे का नया पौधा नर्सरी में तैयार करके लगाया जाता है। वैसे तो बीज इधर उधर फैलकर खुद भी उग आता है।

Scanned with OKEN Scanner

यूकेलिप्टस (सफेदा)

देशी नाम सफेदा या युकेलिप्टस, नीलगिरी
वैज्ञानिक नाम *Eucalyptus terticornis* युकेलिप्टस टेरटीकॉर्निस
उपयोगी भाग बीज, ,पत्ते, लकडी

सफेदा या युकेलिप्टस का वृक्ष बहुत तेजी से बढने वाला होता है। सामान्यतः इसकी 700 प्रजातियां होती है। यह एक सदाबहार विशालकाय वृक्ष होता हें इसकी ऊँचाई 20 मीटर तक हो जाती है। तना एकदम सीधा बढता है जो कि 12 से 15 मीटर तक बढ जाता हैं तथा शाखाऐं बहुत ऊँचाई पर जाकर निकलती हैं। इसकी छाल धूसर सफेद रंग की होती है तथा वृक्ष की उम्र बढने पर गहरे भूरे रंग के चकत्ते से बन जाते है , और ये लम्बी पटिटयों में झडते रहते हैं। इसकी पत्तियाँ पीलापन लिए हरी तथा भालाकार होती हैं तथा इन्हे रगडने पर तीखी व तेज खुशबू आती है। फूल सफेद रंग के वर्ष में दो बार अगस्त– सितम्बर व मार्च–अप्रेल में आते हैं। फल सितम्बर–अक्टूबर व अप्रेल –जून में आते हैं। पत्ते पीले पडकर झड़ते रहते हैं तथा साथ ही नई मुलायम पत्तियाँ आ जाती है।

इसकी पत्ती छाल व लकडी उपयोगी है। जानवर इसकी पत्तियाँ नही खाते। इसकी लकडी जलाने व फर्नीचर बनाने तथा बल्ली आदि बनाने के काम आती है। इसकी पत्तियों से सुगन्धित तेल निकाला जाता है जो कि दवाई बनानें में इस्तेमाल होता है। इसकी सूखी पत्तियों को जलाने पर निकलने वाले धुऐं से मच्छर भाग जाते हैं। इसकी मोटी व सीधी लकडी से स्थानीय लोग छपरों में लगने वाला बलींडा बनाते हैं।

सफेदे के वृक्ष के लिये उपजाऊ, अच्छे जल निकास वाली भूमि अच्छी रहती है। जलोढ भूमि पर यह नही पनपता वैसे तो सभी प्रकार की मिटटी मे पाया जाता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता हैं।

सू-बबूल

देशी नाम सू–बबूल
वैज्ञानिक नाम *Leucaena leucophloea* ल्युकेना ल्युकोफलोईया
उपयोगी भाग बीज,पत्ते, लकडी

सू–बबूल बहुत तेजी से बढने वाला वृक्ष है। राजस्थान की गर्म व शुष्क जलवायु में प्रायः सभी जगह बहुतायत से पनपता है। इसकी दो जातियां सामान्यतः पाई जाती है एक का छत्रप गोल छतरी की तरह फैला हुआ होता है तथा दूसरी जाती का तना ऊपर की तरफ बढती है। सू–बबूल के पेड की ऊँचाई 5 से 10 मीटर तक की होती है। छाल गहरे कत्थई व काले रंग की होती है। इसकी पत्तियाँ पंख जैसी गहरी तथा संयुक्त होती फूल हल्के पीले रंग के होते हे। इसका गोल फूल कई फूलों का समूह होता है,जो कि अक्टूबर से नवम्बर के मध्य आता है। फलियाँ जनवरी माह तक तैयार हो जाती है ये गहरे बादामी रंग की होती हैं। पतझड नाम मात्र का होता है। साथ ही नई मुलायम पत्तियाँ आ जाती है।

इसके पत्तों से सुपाच्य हरा चारा मिलता है इसे पशु बहुत चाव से खाते है। लकडी जलाने व फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसकी पत्तियों में नाइट्रोजन व पोटाश की मात्रा बहुत अधिक होती हैं। जो कि पशुओं के विकास के लिए उत्तम होती हैं इसकी पत्तियों की खाद से जमीन की उपजाऊ क्षमता बढती है।

सु–बबूल नम व काली मिटटी मे अच्छा उगता है। जलोढ भूमि पर यह नही पनपता वैसे तो सभी प्रकार की मिटटी मे पाया जाता है। चट्टानो व पथरीली भूमि मे मुश्किल से पनपता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

सालर

देशी नाम सालर
वैज्ञानिक नाम *Boswellia serrata* बास्वेलिया सीरेटा
उपयोगी भाग गोंद,पत्ते, लकडी

अरावली पर्वत श्रृंखला मे पहाडी ढलानो पर तथा चोटियो पर पाया जाता है। इसके पत्तो को रगड कर सूंघने पर तेज खुशबू आती हे। पत्ते शाखाओ के सिरो पर गुच्छो मे लगते है। इसकी छाल कागज की परतो जैसे उतरती रहती है। इसकी छाल पीली हरी लाल चक्तो मे उतरती रहती है। इसकी जडे उथली रहती है। पत्तियाँ जनवरी से अप्रैल के मध्य गिरने लगती है।नई पत्तियाँ मई–जून मे आती है।

फल त्रिकोणीय होते है। पंखुडियो वाले बीज होते है। हर गुठली मे 3 बीज होते है। जो कि मई–जून में पकते है। इसके पेड की ऊँचाई 5 से 10 मीटर तक हो जाती है। इसकी पत्तियों पर परजीवी पौधा उगा रहता है। जो इसकी बढवार को कम कर देता है।

इसकी पत्तियाँ चारे के रूप मे उपयोग होती है। भेड़–बकरियां इसके पत्ते बड़े चाव से खाती है। इसकी लकडी से खिलौने बनाये जाते है। इसके गोंद (लोबान) से दवाई व धूप बत्ती बनाई जाती है। इसकी पतली छाल जले हुए स्थान पर लगाने पर त्वचा जल्दी आती है।

इसके लिए पत्थरीली पहाड़ की ढलान कम गहरी मिट्टी उपयुक्त होती है व इस प्रकार की मिट्टी में अच्छा पनपता है। इसकी डाल काट कर लगाने से नया पौधा तैयार हो जाता है।

सागवान

देशी नाम सागवान
वैज्ञानिक नाम *Tectona grandis* टेक्टोना ग्रेन्डिस
उपयोगी भाग पत्ते, लकडी, फल, छाल

सागवान पतझड वाला वृक्ष है। यह काफी बडा व जाना–पहचाना वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 45 से 50 मीटर तक होती है इसका तना गोल सीधा और लम्बा तथा 3 से 4 मीटर तक मोटा हो जाता है। सागवान की छाल हल्के पीले, सुनहरे रंग की होती है। समय के साथ इसका रंग गहरा बादामी होता जाता है। इसके पत्ते हल्का पीलापन लिए हरे रंग के काफी चौडे होते हैं। पत्ते शाखाओं पर आमने सामने लगते हैं। नई पत्तियाँ पीलापन लिए हल्के ताम्बे जैसे रंग की आती है। पत्तियों के साथ ही सफेद रंग के छोटे–छोटे फूल गुच्छो में जुलाई से सितम्बर माह के मध्य आते हैं। इसके फल सख्त गोल व अन्त में नोक वाले तथा छोटे आकार के धूसर रंग के होते है। प्रत्येक फल में 2 से 3 बीज होते हैं। जो कि जनवरी फरवरी माह तक तैयार हो जाते हैं। छाल हल्के भूरे रंग की होती है। इसकी जडे काफी गहराई तक जाती हैं।

सागवान की पत्ते, फल, लकडी व तने की छाल उपयोगी होती है। इसके फलों से तेल निकाला जाता है। जो कि बाल बढाने के लिए व खुजली में इस्तेमाल किया जाता है। इसकी लकडी में तेलीय त्तव होने से यह काफी मजबूत व टिकाऊ होती हैं। इससे अच्छी किस्म के फर्नीचर तथा मकानों के खिडकी व दरवाजे तथा इसकी लकडी ईंधन के रूप मे भी उपयोग होती है। इसके पत्तों से तैयार रंग लकडी रेशम व कपडों की रंगाई व छपाई में काम आता है। इसकी पत्तियाँ चारे के रूप में भी इस्तेमाल होती हैं। पत्तो से ग्रामीण इलाकों में लोग धरों के छप्पर बनाते हैं।

सागवान के वृक्ष के लिए कल्लर गहरी उपजाऊ व अच्छे जल निकास वाली मिट्टी उपयुक्त होती है यदि भूमि में थोडी रेत की मात्रा हो तो इसकी बढवार अच्छी होती है। वैसे तो यह पत्थरीली भूमि मे भी उग आता है। नय पौधा गुठली से तैयार होता है। इस पर पुराने पौधे से कलम चढाई जाती है इसे कलम चढा कर ही बोया जाता है। क्यों कि इस प्रकार बोने से पौधों के मरने की सम्भावना कम रहती है।

Scanned with OKEN Scanner

शहतूत

देशी नाम शहतूत , तूंत
वैज्ञानिक नाम *Morus Alba* मोरस एल्बा
उपयोगी भाग छाल , पत्ते, लकडी ,फल

यह सदाबहार हमेशा हरा रहने वाला 4 से 6 मीटर तक ऊँचाई मे बढने वाला वृक्ष है। इसे तूंत भी कहते है। इसका तना पीलापन लिए धूसर रंग का तथा चिकना होता है। इसकी जडे फैली हुई तथा काफी गहराई तक जाती हैं। जमीन के पास तने को सहारा देने के लिए कुछ जडे होती है। शाखायें लम्बी व ऊपर की तरफ उठी हुई रहती हैं। पुरानी पत्तियों के गिरने के पहले ही नई पत्तियाँ आ जाती हैं। पत्तियाँ चिकनी व चौडे आकार की मुलायम तथा किनारों पर कटी हुई होती है। फूल सफेद व छोटे होते है। फल गहरे भूरे गुलाबी तथा हरे रंग के होते है जो कि खाने में काफी मीठे व पौष्टिक होते हैं।

शहतूत की छाल, पत्ते, लकडी ,व फल उपयोगी होते है। इसकी छाल मे औषधीय गुण होता है। जिसे काढा बनाकर पिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं तथा तेज बुखार में पिलाने से बुखार उतर जाता है। इसके फल पित्त का समन करने में काम आते हैं। इसके पत्ते चारे मे काम आते है। इसकी पत्तियों पर रेशम के कीडे पाले जातें हैं। इसकी पतली शाखाओं से टोकरियाँ बनाई जाती हैं। लकडी बहुत मजबूत होती है जो कि ईंधन व कृषि उपकरणों के हत्थे बनाने के काम आती है।

इसके लिए नम व जलोढ मिट्टी जिसमे जल निकास अच्छा हो उपयुक्त होती है पहाडियों पर यह नही पनपता सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। नया पौधा नर्सरी में बीज से तैयार किया जाता है।

क्षेत्र में पैदा होने वाले वृक्ष व उनके वैज्ञानिक नाम की सूची :

क्र.सं.	वृक्ष का नाम	वैज्ञानिक नाम	
1	अमलतास– गरमाला,कडियाला	Cassia fistula	केसिया फिस्टुला
2	अर्जुन– ताल वृक्ष	TerminaliaArjuna	टर्मिनेलिया अर्जुना
3	अमरूद	Pisidium guajava	पिसीडियम ग्वाजवा
4	अनार	Punica granatum	प्युनिका ग्रनेटम
5	अशोक	Polyalthia longifolia	पोलियालिथिया लोन्जीफोलिया
6	अरडू	Ailanthus excelsa	आइलेन्थस एक्सेलस
7	आँवला	Embica Officinalis	ऐम्बेलिका ऑफिसिनेलिस
8	आम	Mangifera Indica	मैन्जिफैरा इन्डिका
9	इमली	Tamarindus indica	टेमेरन्डस इन्डिका
10	इजराइली बबूल	Acasia Tortlis	अकेशिया टोरटलिस
11	करौंदा	Carissa carandas	केरिसा केरेन्डस
12	करंज	DeÙkis indica	डेरिस इन्डिका
13	कचनार	Bauhinia variegata	ब्युहिनिया वैरिगेटा
14	कदम	Anthocephalus Cedamba	ऐन्थोसिफेलस कदम्बा
15	कैर	Capparis decidua	केपेरिस डेसिडुआ
16	काला खैर	Acacia catechu	अकेशिया केटचू
17	कूमटा (सफेद खैर)–कुमट	Acacia senegal	अकेशिया सैनेगल
18	खेजडी	Prosopis cineraria	प्रासोपिस सिनेरेरिया
19	खिरनी	Mimusops hexandra	मिम्युसोपस हैक्जैन्ड्रा
20	गूगल	Commiphora wightii	कोमीफोरा वाइटिई
21	गुलमोहर	Delonix regia	डेलोनिक्स रेजिया
22	गुलर	Ficus glomerata	फाईकस ग्लयूमरेटा
23	गुन्दी	Cordiya gharaf	कोरडिया धारफ
24	जंगल जलेबी	Pithecellobium dulce	पिठिसिलोबियम ड्यूलिस
25	जंगली खजूर	Phoenix cylvestris	फीनिक्स सिल्वेस्ट्रिस
26	जामुन	Syzygium cumini	साइजियम क्युमिनी
27	तेन्दु	Diospyros melanoxylon	डिसिपेरस मैलानोक्सिलोन
28	देशी बबूल– कीकर–बोंली	Acacia nilotica	अकेशिया निलोटिका
29	धोंक–धोंकडा	Anogeissus pendula	एनोगीसेस पेंडुला
30	नींबू	CitrusAurantifolia	साईटरस एयुरन्टीफोलिया
31	नीम	Azadirachta indica	अजाडिराक्टा इन्डिका
32	ढाक ,पलाश, छीला, खांकरा, टेसू	Butea monosperma	ब्यूटिया मोनोस्परमा

Scanned with OKEN Scanner

33	पीपल – पीपली	Ficas religiosa	फाइकस रिलिजिओसा
34	पापडी – चुरैल	Holoptelea integrifolia	होलोपथैलिया इन्टिग्रिफोलिया
35	पीलू –जाल	Salvadora oleoides	सलवाडोरा ओलिओडिस
36	फराश	TemericsAphaila	टेमेरिक्स अफाइला
37	बरगद – बड	Ficus bengalesis	फाइकस बैंगालेसिस
38	बकायन	MeliaAgadirach	मैलिया अजाडिरैच
39	बेर	ZiZyphus mauritiana	जुजुफस मोरेशियाना
40	बेल	Aegle marmelos	एग्लै मारमैलस
41	बहेड़ा	Terminalia bellirica	टर्मीनेलिया बेलिटिका
42	बंगाली बबूल	AcaciaAuriculiformis	अकेशिया औरीकुलीफोर्मिस
43	बाँस	Dendrocalamus strictus	डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस
44	बिलायती कीकर	Prosopis juliflora	प्रोसोपिस जूलीफलोरा
45	भिलावा	SemecarpusAnacardium	सेमकारपस एनाकरेडियम
46	महुआ	Madhuca longifolia	मधुका लोन्जीफोलिया
47	मिजारी	Cassia ciama	केशिआ सिआमा
48	मौलश्री	Mimusops elengi	मिम्युसोपस एलेंगी
49	रोझ– सफेद कीकर	Acacia leucophloea	अकेशिया ल्यूकोफलोइया
50	रोहिडा	Tecomella undulata	टीकोमेला अन्डूलेटा
51	लैसवा	Cordia dicholoma	कोरडिया डिकोलोमा
52	सेमल	Bombax ciba	बोम्बेक्स सीबा
53	सफेदा, यूकेलिप्टस	Eucalyptus terticornis	युकेलिप्टस टेरटीकॉर्निस
54	सालर	Boswellia seÙkata	बास्वेलिया सीरेटा
55	सागवान	Tectona grandis	टेक्टोना ग्रेन्डिस
56	सिरिस	Albizzia lebbek	अलबीजिया लेबैक
57	सेंहजना	Moringa oleifera	मोरिंगा ओलिफैरा
58	सीताफल	Annona squamosa	अन्नोना स्क्वामोसा
59	सूबबूल	Leucaena leucophloea	ल्युकेना ल्युकोफलोईया
60	शहतूत	MorusAlba	मोरस एल्बा
61	शीशम	Dalbergia sissoo	डलबर्जिया सीसु
62	हिंगोटा	BalanitesAegyptica	बैलन्टिस इजिप्टिका

घासें व झाडियाँ

क्र.सं.	वृक्ष का नाम	वैज्ञानिक नाम	
1	अश्वगन्धा	withania somnifera	विथानिया सोमनीफेरा
2	अडूसटा/ वासा	Adhatoda vasica	एढाटोडा वासिका
3	अपामार्ग	AchyranthesAspera	एकरैंथस असपेरा
4	आक	Calotropis procera	क्लोटरो परोसेरा
5	औगा / अपामार्ग	AchyranthesAspera	एचरमैन्थस एस्पेरा
6	गोखरू	Tribulus teÙkesteris	ट्रिब्युलस टैरसटेरिस
7	चिनोटी	Abrus precatorius	एबरस परेसटोरियस
8	झरबैर	Zizyphus nummularia	जुज्युफस न्युमुलेरिया
9	बरू	Sorgham helepense	सोरगम हैल्पेनस
10	तूहर	Euphorbia neriifolia	युफोरबिया दैरीफोलिया
11	धतूरा	Datura innoxia	दतुरा इनोक्सिया
12	भूमि आँवला	Phyllanthus fraternus	फाइलैंथस फ्रैटरनस
13	वनतुलसी	Ocimum basilicum	ओसीमम बैसलीकम
14	सफेदमूसली	Chlorophytum tuberosum	क्लोरोफाइटम टयुबरोसम
15	शतावर	Asparaggus racemosus	एसपारागस रैसीमोसस
16	शंखपुष्पी	EvolvulusAlsinoides	एवोलब्युलस अलसीनोइडस
17	हडजोड	Cissus quadrangularis	काईसस कवाडरंगुलेरियस

Scanned with OKEN Scanner